

शिक्षा मंडल शताब्दी समारोह



१९९४ - २०९४

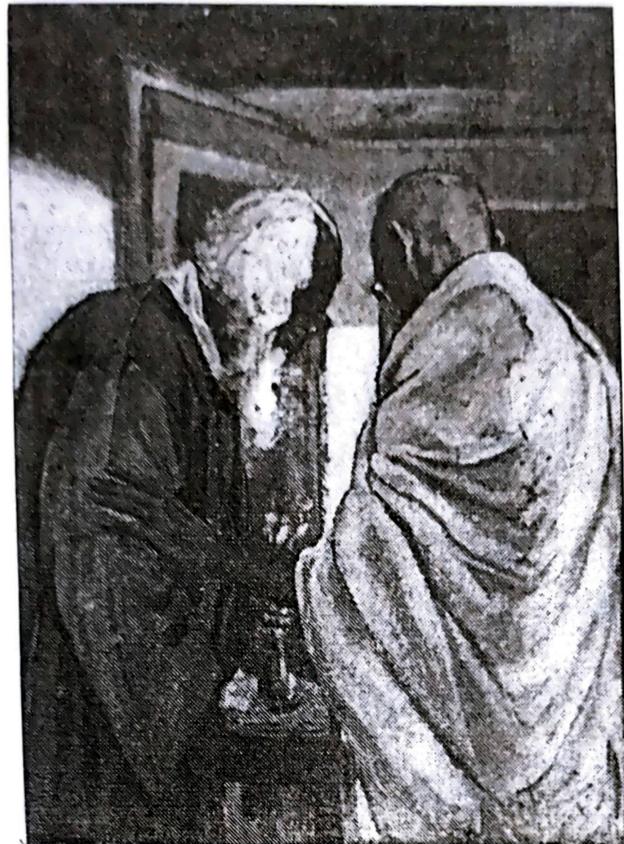


On the occasion of Shiksha Mandal Centenary (L→R) Shri. Madhur Bajaj, Justice Chandrashekhar Dharmadhikari, Shri. Nitin Gadkari, Union Minister of Road Transport and Highways, Shri. C. Vidyasagar Rao, Governor of Maharashtra, Shri. Pranab Mukherjee, President of India, Shri. Devendra Fadnavis, Chief Minister of Maharashtra, Shri. Rahul Bajaj, President, Shiksha Mandal, and Shri. Narayandas Jajoo were present.

# विचारधन



शिक्षा मंडल, वर्धा.



# विचारधन



शिक्षा मंडल, वर्धा

# विचारधन

## ♦ प्रकाशक

संजय भार्गव

सभापती

शिक्षा मंडल, वर्धा

## ♦ मुद्रक

रणजित देसाई

परंधाम मुद्रणालय (ग्राम सेवा मंडळ),

पवनार- ४४२३११, जि. वर्धा

- ♦ आवृत्ति पहिली - जून २०१० : प्रति १०,०००
- ♦ आवृत्ति दुसरी - जुलाई २०१५ : प्रति १५,०००

(शिक्षा मंडल के छात्रों के लिए वितरण हेतु।)

शिक्षा मंडल, वर्धा में आपका स्वागत है।

मुझे “विचारधन” की दूसरी आवृत्ति आपके सामने रखने में हर्ष एवं गर्व हो रहा है।

इसके दो कारण हैं।

पहला, कि शिक्षा मंडल के प्रत्येक महाविद्यालय ने पिछले पाँच वर्षों में अनेक मापदंडों पर प्रगति की है। यह हमारे प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के प्रयत्नों से हुआ है, हो रहा है, होता रहेगा।

दूसरा, कि यह हमारा शताब्दी वर्ष है। शिक्षा मंडल एक शताब्दी से कार्यरत है और अपने अगले सौ वर्षों की ओर ध्येय एवं उम्मीद से देख रहा है यह एक महत्वपूर्ण बात है। कितनी संस्थाएँ इस स्थिती में हैं? इस आवृत्ति में बदल कम किये गए हैं। सिर्फ रुमी की एक कविता और हमारे अध्यक्ष श्री. राहुल बजाज का शताब्दी समारोह पर हुआ भाषण उसमें जोड़ा गया है। यह पहली आवृत्ति के चुनाव के चिरस्थायी होने का भी प्रमाण है। आशा है कि यह आवृत्ति आपको सोचने के लिये प्रवृत्त करेगी, आपके जीवन को स्थैर्य एवं दिशा देगी।

आपका शुभाकांक्षी



(संजय भार्गव)

सभापती  
शिक्षा मंडल, वर्धा

जुलै २०१५

## शिक्षा मंडल की संस्था में आपका स्वागत है ।

शिक्षा मंडल की स्थापना सन् १९१४ में एक नए भारत को सक्षम बनाने एवं युवा पिढ़ी का विकास करने के लिए हुई थी । हमारी संस्थाओं के द्वारा आप डिग्रियाँ हासिल करते हैं पर यह न हमारी शुरुआत है न अंत । हमारा मकसद युवा पिढ़ी का सर्वांगीण विकास है, ताकि वह राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकें ।

आजकल दुनिया एक अजीब दिशा में जा रही है, खासकर शिक्षा की दुनिया । इसमें नम्बरों और तमगों की होड़ लगी है । हमारी समझ में यह दिशा गलत है । हमारा प्रयास रहेगा कि, आपको सही शिक्षा मिले । जिसमें आपकी सोचने की शक्ति, जो सही सिद्धांतों और उनके क्रियान्वयन पर आधारित हो । आपका मानवतावादी दृष्टिकोण हो और आप अपने आपको उभारने पर तुले हों, आपमें कठिनाइयों से उभरने का मनोबल हो । याने आपमें चरित्र और योग्यता हो ।

‘हमारा कोई एक कार्यक्रम नहीं है, ना ही हम कोई एक विचारशैली आप पर थोपना चाहते हैं । मगर राष्ट्रीयता, ईमानदारी और मानवतावाद में हम विश्वास रखते हैं और चाहते हैं कि, आप भी इनसे प्रभावित हो ।

शिक्षा मंडल की यह खुशकिस्मती है कि, हमें गांधीजी और विनोबाजी के सहप्रवास का सौभाग्य प्राप्त हुआ । हम इस धरोहर के सही वारिस तभी हैं जब हम उसे संजोएँ, एवं नए समय की चुनौतियों में उन विचारों की सार्थकता साबित करें । शिक्षा मंडल एक निराली संस्था है और हमारे छात्र भी निराले बने, यही हमारी आकांक्षा है ।

यह विचारधन इन सब विचारों को दर्शति हैं। यह एक दिशा की तरफ इशारा करता है। युवावस्था में हम निर्णय लेते हैं कि, हम क्या हैं और क्या बनना चाहते हैं। कुविचारों का तो बड़े जोर-शोर से प्रसार होता है। अब समय आ गया है कि सुविचार भी आपके सामने रखे जायें। आशा है कि, यह सुविचार-संग्रह आपको सोचने के लिए प्रवृत्त करेगा।

यह हमारा पहला प्रयत्न है। गो. से. वाणिज्य महाविद्यालय, वर्धा के डॉ. किशोर सानप और श्री विनय चौहान, रा. ब. कृषि महाविद्यालय के श्री. अतुल शर्मा और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के डॉ. हेमचन्द्र वैद्य ने इस सुविचार-संग्रह को रूप दिया। मैं उन सबका आभारी हूँ। खासकर डॉ. किशोर सानप और श्री अतुल शर्मा का। आप इस चयन पर अपने सुझाव अवश्य भेजे।

आप सब अनूठे हैं और संभावनाओं से भरे हैं। अपने आप को खोना बड़ा आसान होता है। अपने आप को पाना कठिन! आप अपने आप को पहचाने और अपनी एक पहचान बनाएँ। इसी शुभकामना के साथ...



(संजय भार्गव)

सभापती  
शिक्षा मंडल, वर्धा

## **Shiksha Mandal : Yesterday, Today And Tomorrow**

*Speech of Shri Rahul Bajaj, President, Shiksha Mandal at  
the Centenary Function of Shiksha Mandal  
on November 26, 2014 at Wardha*

Respected Shri Pranab Mukherjee, President of India, Shri C. Vidyasagar Rao, Governor, Maharashtra, Shri Devendra Fadnavis, Chief Minister, Maharashtra and our very own Shri Nitin Gadkari, Union Minister for Road Transport and Highways.

At the outset may I convey a very warm welcome to Wardha and our gratitude for all of you being here today. It is a rare event indeed to have so many luminaries together in Wardha. It has certainly not happened for a decade, if not more.

I assure you that the institution, whose centenary we have all gathered together to celebrate, deserves this indulgence.

It was founded a century ago because its founders correctly saw education as the root of all national development. It has always tried to be true to its mandate and always will try to remain so.

While it is a private institution, its purpose is only public. It combines the best of both these worlds. The sense of purpose, accountability and constant development of the private sector and the inclusiveness of the public. Income of the parent does not determine access to it, only the merit of the student.

In a situation wherein publicly funded institutions, especially at the state level, have become synonymous with poor quality Shiksha Mandal is living proof that high quality can be delivered by such institutions, through committed teachers and managements.

This is important. Because education is the key route to social mobility. The poor know it. And are willing to spend beyond their means to ensure the best education for their children.

It is as important for the well off sections to remain connected to their society, and not run away from it.

Shiksha Mandal is playing its role on both fronts.

It gives me great pleasure that both Shri Gadkari and Shri Fadnavis have a Shiksha Mandal connection. Shri Gadkari is an alumnus of our G.S. Commerce College, Nagpur as is Shri Fadnavis's wife. With a son and son-in-law like this, we should be doing something right ! Our roll call of eminent alumni is a long one.

Shiksha Mandal has a glorious past but what matters is its future. We are working to make its next century better than its first. Tall order. But we deserve the past only if we make the future better than it.

We have set ourselves the following 5 objectives.

1. 100% of our intake capacity should be filled. We should have a waiting list of students.
2. 100% of our students should pass
3. 100% of our students should pass with a first class
4. 100% of our students should have character and
5. 100% of our students should get jobs

On the qualitative side we want to be a knowledge creating institution, a social problem solving institution, a teacher's institution.

These look difficult but we are quite on our way to achieve them.

Improvement is a never ending journey. A delightful journey. We thank all our stake holders for their support, even as they, at times, give us amused looks for our unworldliness. We look forward to their continued support.

Thank you once again Shri Mukherjee, Shri Rao, Shri Fadnavis and Shri Gadkari and all in the audience.

**Jai Hind**

## पसायदानः विश्वकल्याणाचे मागणे

आता विश्वात्मके देवे । येणे वाग्यज्ञे तोषावे ।  
 तोषोनि मज द्यावे । पसायदान हे ॥ १ ॥  
 जे खळांची व्यंकटी सांडो । तया सत्कर्मी रती वाढो ।  
 भूतां परस्परे जडो । मैत्र जीवांचे ॥ २ ॥  
 दुरितांचे तिमिर जावो । विश्व स्वधर्म सूर्य पाहो ।  
 जो जे वांछील तो ते लाहो । प्राणिजात ॥ ३ ॥  
 वर्षत सकळ मंगळी । ईश्वरनिष्ठांची मांदियाळी ।  
 अनवरत भूमंडळी । भेटू भूतां ॥ ४ ॥  
 चला कल्पतरुंचे आरव । चेतना चिंतामणीचे गांव ।  
 बोलते जे अर्णव । पीयूषांचे ॥ ५ ॥  
 चंद्रमे जे अलांछन । मार्तड जे तापहीन ।  
 ते सर्वाही सदा सज्जन । सोयरे होतु ॥ ६ ॥  
 किंबहुना सर्व सुखी । पूर्ण होऊनि तिही लोकी ।  
 भजिजो आदिपुरुषी । अखंडित ॥ ७ ॥  
 आणि ग्रंथोपजीविये । विशेषी लोकी इये ।  
 दृष्टादृष्ट विजये । होआवे जी ॥ ८ ॥  
 येथ म्हणे श्री विश्वेश्वरावो । हा होईल दान पसावो ।  
 येणे वरे ज्ञानदेवो । सुखिया झाला ॥ ९ ॥

- संत ज्ञानेश्वर (सन् १२७५-१२९६)

(स्त्रोत: सार्थ पसायदान)

**टीप :** माझ्या वाणी-यज्ञाने संतुष्ट होऊन विश्वरूप देवाने विश्वकल्याणासाठी प्रसाद द्यावा. खलांचा वाईटपणा नष्ट होऊन सत्कार्याप्रती त्यांची आवड वाढो आणि त्यांना निस्वार्थ प्रेम करणाऱ्या जीवलग मित्रांची भेट घडो. विश्वातील दुःखरूप अंधार नष्ट होवो आणि विश्वाला स्वधर्माचा सूर्य प्रकाश मिळो. विश्वातील सर्व मानवांच्या इष्ट कामना पूर्ण होवो. विश्वात शुभ मांगल्याचा वर्षाव होवो. ईश्वरभक्तांचा-संतांचा समुदाय निर्माण होवो व त्यांच्यात परस्पर सौहार्द निर्माण होवो. हे विश्व कल्पवृक्षाचे उद्यान आहे. सचेतन चिंतामणींचे गाव आहे. अमृताचा समुद्र आहे. ईश्वरभक्त हे चंद्राप्रमाणे शीतल आणि कोणतेही लांछन नसलेले तसेच सूर्यप्रिमाणे सर्वांना समान प्रकाश देणारे आणि दुःख-ताप दूर करणारे आहेत. ते सर्वांचेच सगेसोयरे सज्जन आहेत. आदिपुरुषाची भक्ती केल्यामुळे तिन्ही लोकांत सुख भरले आहे. यानुसार ज्यांचे आचरण आहे त्यांच्या जीवनात ऐहिक-पारलैंकिक सुखाचा विजयोत्सव आहे. ज्ञानदेवाच्या प्रार्थनेने विश्वरूप देव प्रसन्न झाला आणि त्याने ज्ञानदेवाला विश्वकल्याणाचा आणि विश्वसुखाचा प्रसाद वर म्हणून विश्वाला वाटण्यासाठी दिला...

## अभंग

१.

सत्यासाठी माझी शब्दविवंचना । न भे मी विठ्ठला कळीकाळासी ॥  
सत्य आम्हा मनी । नव्हो गबाळाचे धनी ॥  
सत्यअसत्याशी मन केले घाही । मानियेते नाही बहुमता ॥

२.

वृक्षवळी आम्हा सोयरी वनचरे । पक्षीही सुस्वरे आळविती ॥  
येणे सुखे रुचे एकांताचा वास । नाही गुण दोष अंगा येत ॥  
आकाश मंडप पृथ्वी आसन । रमे तेथे मन कळाडा करी ॥  
तुका म्हणे होय मनासी संचाद । आपुलाचि वाद आपणाशी ॥

३.

जोडोनिया धन उत्तम वेब्हारे । उदास विचारे वेच करी ॥  
उत्तम चि गती तो एक पावेल । उत्तम भोगील जीव स्खाणी ॥  
परउपकारी नेणे परनिंदा । परस्त्रिया सदा बहिणी माया ॥  
भूतदया गाईपशूंचे पालन । तान्हेल्या जीवन वनामाजी ॥  
शांतिरूपे नव्हे कोणाचा वाईट । वाढवी महत्त्व वडिलांचे ॥  
तुका म्हणे हे चि आश्रमाचे फळ । परमपद बळ वैराग्याचे ॥

४.

जे का रंजले गांजले । त्यासी म्हणे जो आपुले ॥  
तोचि साधू ओळखावा । देव तेथेचि जाणावा ॥  
मृदु सबाहा नवनीत । तैसे सज्जनाचे चित्त ॥  
ज्यासि अपंगिता नाही । त्यासि धरी जो हृदयी ॥  
दया करणे जे पुत्रासी । ते चि दासा आणि दासी ॥  
तुका म्हणे सांगू किती । तो चि भगवंताची मूर्ती ॥

५.

अर्थविण पाठांतर कासया करावे । व्यर्थ चि मरावे घोकूनियां ॥  
घोकूनियां काय वेगी अर्थ पाहे । अर्थरूप राहे होऊनियां ॥  
तुका म्हणे ज्याला अर्थी आहे भेटी । नाही तरी गोष्टी बोलो नका ॥

- संत तुकाराम (सन् १६०८-१६५०)

(स्त्रोत : तुकाराम : व्यक्तित्व आणि कवित्व, डॉ. किशोर सानप, लोकवादमय गृह, मुंबई.)

## मनाचे श्लोक

मना सज्जना भक्तिपंथेचि जावे । तरी श्रीहरी पाविजेतो स्वभावे ।  
 जनी निंद्य ते सर्व सोडूनि द्यावे । जनी वंद्य ते सर्व भावे करावे ॥ १ ॥  
 मना बासना दुष्ट कामा नये रे । मना सर्वथा पापबुद्धी नको रे ।  
 मना धर्मता नीति सांडू नको रे । मना अंतरी सार वीचार राहो ॥ २ ॥  
 मना पापसंकल्प सोडूनि द्यावा । मना सत्य संकल्प जीवी धरावा ।  
 मना कल्पना ते नको वीषयांची । विकारे घडे हो जनी सर्व ची ची ॥ ३ ॥  
 नको रे मना क्रोध हा खेदकारी । नको रे मना काम नाना विकारी ।  
 नको रे मदा सर्वदा अंगिकारू । नको रे मना मछरू दंभ भारू ॥ ४ ॥  
 देह त्यागिता कीर्ति मागे उरावी । मना सज्जना हेचि क्रीया धरावी ।  
 मना चंदनाचे परी त्वा झिजावे । परी अंतरी सज्जना नीववावे ॥ ५ ॥  
 नको रे मना द्रव्य ते पूढिलाचे । अती स्वार्थबुद्धी न रे पाप साचे ।  
 घडे भोगणे पाप ते कर्म खोटे । न होता मनासारिखे दुख मोठे ॥ ६ ॥  
 मना मानसी दुख आणू नको रे । मना सर्वथा शोक चिंता नको रे ।  
 विवेके देहबुद्धी सोडूनि द्यावी । विदेहीपणे मुक्ति भोगीत जावी ॥ ७ ॥  
 मरे येक त्याचा दुजा शोक वाहे । अकस्मात तोही पुढे जात आहे ।  
 पुरेना जनी लोभ रे क्षोभ त्याते । म्हणोनी जनी मागुता जन्म घेते ॥ ८ ॥  
 मनी मानव वेर्थ चिंता वळाहाते । अकस्मात होणार होऊनि जाते ।  
 घडे भोगणे सर्वही कर्मयोगे । मतीमंद ते खेद मानी वियोगे ॥ ९ ॥  
 मना सर्वथा सत्य सांडू नको रे । मना सर्वथा मिथ्य भांडू नको रे ।  
 मना सत्य ते सत्य वाचे वदावे । मना मिथ्य ते मिथ्य सोडूनि द्यावे ॥ १० ॥

- संत रामदास (सन् १६०८-१६८१)

(स्त्रोत : श्री समर्थ रामदासकृत मनाचे श्लोक, श्री समर्थ सेवा मंडळ, सज्जनगड, जि. सातारा.)

## खरा तो एकचि धर्म

खरा तो एकचि धर्म | जगाला प्रेम अर्पवे ॥  
 जगी जे हीन अतिपतित | जगी जे दीन पददलित ॥  
 तया जाऊन उठवावे | जगाला प्रेम अर्पवे ॥ १ ॥  
 जयांना कोणी ना जगती | सदा जे अंतरी रडती |  
 तया जाऊन हसवावे | जगाला प्रेम अर्पवे ॥ २ ॥  
 समस्तां धीर तो द्यावा | सुखाचा शब्द बोलावा |  
 अनाथा साह्य ते द्यावे | जगाला प्रेम अर्पवे ॥ ३ ॥  
 सदा जे आर्त अति विकल | जयांना गांजती सकल |  
 तया जाऊन हसवावे | जगाला प्रेम अर्पवे ॥ ४ ॥  
 कुणा ना व्यर्थ शिणवावे | कुणा ना व्यर्थ हिणवावे |  
 समस्ता बंधु मानावे | जगाला प्रेम अर्पवे ॥ ५ ॥  
 प्रभूची लेकरे सारी | तयाला सर्वही प्यारी |  
 कुणा ना तुच्छ लेखावे | जगाला प्रेम अर्पवे ॥ ६ ॥  
 जिथे अंधार औदास्य | जिथे नैराश्य आलस्य |  
 प्रकाशा तेथ नव न्यावे | जगाला प्रेम अर्पवे ॥ ७ ॥  
 असे जे आपणाशी | असे जे वित्त वा विद्या |  
 सदा ते देतची जावे | जगाला प्रेम अर्पवे ॥ ८ ॥  
 भरावा मोद विश्वात | असावे सौख्य जगतात |  
 सदा हे ध्येय पूजावे | जगाला प्रेम अर्पवे ॥ ९ ॥  
 असे हे सार धर्माचे | असे हे सार सत्याचे |  
 परार्था प्राणही द्यावे | जगाला प्रेम अर्पवे ॥ १० ॥  
 जयाला धर्म तो प्यारा | जयाला देव तो प्यारा |  
 तयाने प्रेममय व्हावे | जगाला प्रेम अर्पवे ॥ ११ ॥

- साने गुरुजी (सन् १८९९-१९५०)

(स्रोत : संस्कार गीते, संकलन-डॉ. दिलीप गरुड, श्रीगणेश प्रकाशन, पुणे, २००८.)

# स्थितप्रज्ञाची लक्षणे

अर्जुन म्हणाला

१. स्थिरावला समाधीत स्थित - प्रज्ञ कसा असे  
कृष्णा सांग कसा बोले कसा राहे फिरे कसा ।

श्रीभगवान् म्हणाले

२. कामना अंतरांतील सर्व सोळूनि जो स्वयें  
आत्म्यांत चि असे तुष्ट तो स्थित - प्रज्ञ बोलिला ।
३. नसे दुःखांत उद्भेद सुखाची लालसा नसे  
नसे तृष्णा भय क्रोध तो स्थित - प्रज्ञ संयमी
४. सर्वत्र जो अनासक्त बरें वाईट लाभतां  
न उल्लासे न संतापे त्याची प्रज्ञा स्थिरावली
५. घेर्डे ओढूनि संपूर्ण विषयांतूनि इंद्रिये  
जसा कासव तो अंगें तेव्हां प्रज्ञा स्थिरावली ।
६. निराहार -बळे बाह्य सोडी विषय साधक  
आंतील न सुटे गोडी ती जळे आत्म - दर्शनें
७. करीत असतां यत्न ज्ञात्याच्या हि मनास ही  
नेती खेंचूनि वेगाने इंद्रिये दांडगी चि कीं
८. त्यांस रोधूनि युक्तीनें रहावे मत्परायण  
इंद्रिये जिंकिली ज्याने त्याची प्रज्ञा स्थिरावली ।
९. विषयांचें करी ध्यान त्यास तो संग लागला  
संगातूनि फुटे काम क्रोध कामांत ठेविला
१०. क्रोधांतूनि जडे मोह मोहानें स्मृति लोपली  
स्मृति-लोपें बुध्दि-नाश म्हणजे आत्म-नाश चि

११. राग-द्वेष परी जातां आली हातांत इंद्रिये  
स्वाभित्वे विषयी वर्ते त्यास लाभे प्रसन्नता
१२. प्रसन्नतेपुढे सर्व दुःखे जाती झडूनियां  
प्रसन्नतेने बुध्दीची स्थिरता शीघ्र होतसे
१३. अयुक्तास नसे बुध्दि त्यामुळे भावना नसे  
म्हणूनि न मिळे शांति शांतीविण कसे सुख
१४. इंद्रिये वर्तता स्वैर त्यांमागे मन जाय जें  
त्याने प्रज्ञा जशी नौका वाच्याने खेंचली जळीं
१५. म्हणूनि इंद्रिये ज्याने विषयांतूनि सर्वथा  
ओढूनि घेतली आंत त्याची प्रज्ञा स्थिरावली
१६. सर्व भूतांस जी रात्र जागतो संयमी तिथें  
सर्व भूतें जिथे जागी ज्ञानी योग्यास रात्र ती
१७. न भंग पावे भरतां हि नित्य  
समुद्र घेतो जिरवूनि पाणी  
जाती तसे ज्यांत जिरुनि भोग  
तो पावला शांति न भोग-लुब्ध
१८. सोडूनि कामना सर्व फिरे होऊनि निःस्पृह  
अहंता ममता गेली झाला तो शांति -रूप चि
१९. अर्जुना स्थिति ही ब्राह्मी पावतां न चळे पुन्हा  
टिकूनि अंत-काळी हि ब्रह्म-निर्वाण मेळवी ॥

- विनोबा

(स्त्रोत - गीतार्डि - अध्याय दुसरा - परंधाम प्रकाशन, पवनार)

## कशाला पंढरी जातो ?

कशाला काशी जातो रे बाबा । कशाला पंढरी जातो ! || १ ||  
 संत सांगती ते ऐकत नाही । इंद्रियाचे ऐकतो ।  
 कीर्तनी मान डोलवितो परी । कोंबडी बकरी खातो || २ ||  
 वडीलजनाचे श्राद्ध कराया । गंगेमाजी पिंड देतो ।  
 खोटा व्यापार थोडा ना सोडी । देव कसा पावतो? || ३ ||  
 खांदी पताका तुळसी गळ्यामध्ये । घडी-घडी टाळ वाजवती ।  
 गरीबगुरांची दया ना चित्ती, दानासी हात आवरतो || ४ ||  
 झालेले मागे पाप धुवाया । गंगेत धावुनी न्हातो ।  
 तुकड्या म्हणे सत्य आचरावाचोनी । कोणीच ना मुक्त होतो || ५ ||

- राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज (सन् १९०९-१९६८)

## प्रार्थना

विपत्तीमध्ये तू माझां रक्षण कर ही प्रार्थना नाही  
 विपत्तीमध्ये मी भयभीत होऊ नये, एवढीच माझी इच्छा  
 दुःखतापानं व्यथित झालेल्या माझ्या मनाचं  
 तू सांत्वन करावंस अशी माझी अपेक्षा नाही  
 दुःखावर जय मिळविता यावा, एवढीच माझी इच्छा  
 माझ्या मदतीला कोणी आलं नाही  
 तर माझां बळ मोडून पडू नये, एवढीच माझी इच्छा  
 जगात माझां नुकसान झालं  
 केवळ फसवणूकच वाढ्याला आली  
 तर माझां मन खंबीर रहावं, एवढीच माझी इच्छा  
 माझां तारण तू करावंस  
 मला तारावंस ही माझी प्रार्थना नाही  
 तरुन जाण्याचं सामर्थ्य माझ्यात असावं, एवढीच माझी इच्छा  
 माझां ओझां हलकं करुन  
 तू माझां सांत्वन केलं नाहीस तरी माझी तक्रार नाही  
 ते ओझां वाहायची शक्ती मात्र माझ्यात असावी, एवढीच इच्छा...

- रवीन्द्रनाथ टागोर

## विद्या-महात्म्य

विद्येविना मती गेली । मतिविना गती गेली ।  
गतिविना वित्त गेले । वित्ताविना शूद्र खचले ।  
एवढे अनर्थ एका अविद्येने केले ॥

- महात्मा ज्योतिबा फुले (सन् १८२७-१८९०)

## मी अजून जहाज सोडलेले नाही

समाजकार्याची ही आंबट कैरी  
खाता खाता दात आंबून गेले आहेत  
तरी ती सोडवत नाही  
राजकीय पाणबुडे कोणत्या क्षणी जहाजाला  
सुरुंग लावतील याचा नेम नाही  
पण बुडण्याची खात्री वाटू लागली  
तरी माझे हे जहाज मी सोडणार नाही  
कारण त्यावर माझी सगळ्यात जास्त प्रीती आहे  
बुडत्या जहाजाच्या कर्णधारालाही ओढ असते घराची  
पण प्रसंग येतो तेव्हा घर बाजूला पडते  
जहाजा बरोबर स्वतःला बुडवून घेणारे कर्णधार जेथे असतात  
तेथेच बुडता देश वाचविणाऱ्या नाविकांच्या पिढ्या जन्म घेतात  
वाट पाहणाऱ्या किनाऱ्यांना  
आणि लाटांच्या उग्र कळूळाला कळू द्या  
मी अजून जहाज सोडलेले नाही....

- बाबा आमटे

(स्त्रोत : ज्वाला आणि फुले / बाबा आमटे)

# बुद्ध विचार-दर्शन (इ.स. पूर्व ५००)

अडीच हजार वर्षांपूर्वी बुद्धाने अखिल मानव जातीच्या कल्याणार्थ बुद्ध धम्माचे प्रतिपादन केले. बुद्धीसंगत आणि तर्कसंगत दर्शन म्हणजेच बुद्धविचार दर्शन होय.

बुद्धसमाजाच्या विशेषता-

१. समाजातील सर्व सदस्य परस्परांना समान मानतात.
२. सर्वांनाच शिक्षण घेण्याचा अधिकार आहे.
३. कोणताही व्यवसाय कुणालाही करण्याचा अधिकार आहे.
४. स्त्रियांना पुरुषांप्रमाणेच समान अधिकार आहे.

बुद्धाने सर्वस्वी त्याग केला त्या बाबी.

१. वेदांना प्रमाण मानणे.
२. आत्मा, मोक्ष, पुनर्जन्म, यज्ञयाग, ईश्वर, ब्रह्म, कर्मविपाक सिद्धांत-मागच्या जन्माच्या कर्माचा परिणाम म्हणून वर्तमान जन्म.
३. चातुर्वर्ष्यव्यवस्था
४. धर्मातील मानवी जीवनाच्या कल्याणाशी संबंधित नसलेले सर्व विचार त्याज्य मानले.

बुद्धाने परिवर्तन केलेल्या बाबी.

१. धर्मातील सर्वच निराशावादी बाबींचे खंडन केले. मी कोण आहे?, मी कोटून आलो? आत्मा अमर आहे वगैरे. नियती आणि ईश्वराने माणसाचे भविष्य आधीच निश्चित केले ही बाबही अमान्य केली.

२. पूर्वजन्मातील कर्माचा वर्तमान जन्मात संबंध असतो हेही अमान्य केले.

बुद्धाने संवीकारलेल्या बाबी.

१. मन हेच माणसाचे केंद्रबिंदू आहे.
२. मनावर नियंत्रण ठेवणे आवश्यक असते.
३. त्याकरिता मनाची साधना आवश्यक आहे.
४. मन हेच चांगल्यावाईटाचे केंद्र आहे. त्याचाच परिणाम माणसाला भोगावा लागतो.
५. मनाला निर्मळ ठेवणे हेच धम्माचे सार आहे.

(स्रोत : बुद्ध आणि त्याचा धम्म, डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर, सिद्धार्थ प्रकाशन, मुंबई, १९९९.)

## माझ्या स्वप्नांचा भारत

निव्वळ माझा म्हणून नव्हे तर त्यात मला उत्तमोत्तमाचे दर्शन घडले म्हणून सर्व जगात भारत हा माझा सर्वाधिक प्रिय देश आहे. कोणत्याही अत्युत्कट महत्त्वाकांक्षी व्यक्तीला आत्मविकासाकरिता जे जे म्हणून हवे ते सर्व भारतात उपलब्ध आहे. मूलतः भारत ही भोगभूमी नसून कर्मभूमी आहे. मला जे काही प्राप्त आहे ते सर्व मला भारताने दिले म्हणून मी त्याला भजतो. साऱ्या दुनियेला देण्याजोगा त्याच्याजवळ संदेश आहे, असा माझा वृद्ध विश्वास आहे. त्याला युरोपचे अंधानुकरण करण्याची मुळीच गरज नाही. धर्मक्षेत्रात भारत सर्वात मोठा ठरू शकेल अशी त्याची पात्रता आहे. भारताने स्वयंप्रेरणेने आत्मशुद्ध्यर्थ जसा प्रयत्न केला तसे दुसरे उदाहरण जगाच्या इतिहासात उपलब्ध नाही. त्याला पोलादी हत्याराची गरज नाही. तो नेहमी दैवी संपत्तीच्या सहाय्यानेच लढत आला आहे. आजही लदू शकतो. दुसरे देश पश्चाबलाचे पुजारी आहेत. त्या सर्वांवर आत्मबलाच्या सहाय्याने भारत विजय मिळवू शकतो. अहिंसेच्या सहाय्याने भारताने संपूर्ण जगाच्या वतीने शांतीदूताचे काम केलेले मला अतिशय आवडेल. ज्या रक्तरंजित मार्गावर चालून स्वतः पाश्चिमात्य थकले त्या मार्गावर भारताला स्वतःचे भवितव्य आढळणार नाही. आम्ही ज्याचे अनुकरण करावे आणि स्वतःच्या पदरी लाभ पाढून घ्यावा असे आम्हाला देण्यासारखे पाश्चिमात्यांजवळ पुष्कळच आहे हे मी नम्रपणे कबुल करतो. ज्ञान हे कोणा एका जातीच्या अथवा देशाच्या एकट्याच्या मालकीचे असू शकत नाही. पण आमच्याकडील अनेकांना वाटते की आम्ही डोळे मिटून पाश्चिमात्यांची फक्त नक्कल करावी कारण त्यापेक्षा आमची अधिक पात्रता नाही. माझा संपूर्ण विरोध फक्त या विचार-विवेकशून्य वृत्तीला आहे...

- महात्मा गांधी (सन् १८६९-१९४८)

(स्रोत : माझ्या स्वप्नांचा भारत, महात्मा गांधी, परंधाम प्रकाशन, पवनार, २००१.)

# धर्म, विज्ञान, सत्य आणि एकाग्रता

अनुभव हेच ज्ञानाचे एकमेव साधन आहे. या जगात धर्म हेच असे एक शास्त्र आहे की ज्याचे निश्चित स्वरूप कळत नाही. कारण ते अनुभवाचे शास्त्र म्हणून शिकविले जात नाही. परंतु काही थोडी माणसे आपल्या निर्दर्शनास येतील की जी नेहमी स्वतःच्या अनुभूतीच्या आधाराने धर्म शिकवित असतात. या लोकांना साक्षात्कारी असे म्हणतात. प्रत्येक धर्मातील ह्या साक्षात्कारी व्यक्ती अनुभूतीची एकच भाषा बोलत असतात आणि एकच सत्य शिकवित असतात. धर्माचे हेच खरे विज्ञान आहे. धर्मविरुन होणारे वाद व भांडणे आध्यात्मिकतेचा अभावच दर्शवीत असतात. धर्मविरुन होणारी भांडणे ही धर्माच्या बाह्यांगावरूनच होत असतात. जेव्हा पावित्र्य व आध्यात्मिक वृत्ती ही लोप पावतात तेव्हा अंतःकरण शुष्क होते व तेव्हाच भांडणे सुरु होतात त्यापूर्वी नाही.

साक्षात्कारमार्गी व्यक्ती सत्याच्या शोधासाठी कटिबद्ध असतात. आधी ते सत्याचा प्रत्यक्ष अनुभव घेतात आणि मग आपापले धर्ममत बनवितात. सर्व धर्माचे अंतिम उद्दिष्ट ईश्वरसाक्षात्कार करून घेणे हेच होय. मानवाने ईश्वराला दिलेले सर्वांत श्रेष्ठ नाव म्हणजे सत्य हे होय. आत्मस्वरूपाचा साक्षात्कार हाच खरेतर सत्याचा साक्षात्कार असतो. प्रत्येक व्यक्ती जर स्वतःचे इष्ट निवडून निष्ठापूर्वक त्याची साधना करेल तर धर्मसिंबंधीचे सर्व विवाद लोप पावतील.

एकाग्रता हा सर्व प्रकारच्या ज्ञानाचा पाया आहे. मन जेव्हा एकाग्र होते व अंतर्मुख होऊन जेव्हा ते स्वतःवरच केंद्रित होते तेव्हा आपल्यातील सर्व शक्ती आपल्या दास बनतात. आपण त्यांचे दास राहत नाही. मनाला अधिकाधिक लहान क्षेत्रात निरुद्ध करणे म्हणजे एकाग्रता होय. मनाला निरोध करण्याचे आठ उपाय आहेत. १. यम-मनाचे नियमन करणे. २. अहिंसा पालन. ३. सत्याचे पालन. ४. ब्रह्मचर्य पालन. ५. नियम-मनाला भटकू न देणे. ६. आसन-योगासने ७. प्राणायाम. ८. धारणा-ध्यान-समाधी. ही अतिंद्रिय ज्ञानाची अवस्था म्हणजे मुक्तीची अवस्था असते.

- स्वामी विवेकानंद (सन् १८६३-१९०२)

(स्त्रोत : धर्माचे स्वरूप आणि साधन, स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण मठ, नागपूर, चौथी आवृत्ती, १९९२)

# शिक्षण : धर्म, शील आणि चारित्र्य

मनुष्याने स्वार्थच करीत न राहता थोडाफार परार्थही केला पाहिजे. यासाठीच धर्माची गरज आहे. कबीर कहे कुछ उद्यम कीजे, आप खाये और औरन को दीजे. या कविराच्या दोह्याप्रमाणे उद्योग करा. स्वार्थ व परार्थ दोन्ही साधा. घर प्रथम सांभाळा. मात्र समाजकार्याताही मदत करा. प्रत्येक माणसाची काया, बाचा व मने अशी त्रिशुद्धी झाली पाहिजे. अशा रीतीने पवित्र झालेल्या माणसाला अपवित्र कोण म्हणेल? आता आपण आपले मन पवित्र केले पाहिजे. आपला सद्गुणाकडे ओढा असला पाहिजे. अशा रीतीने आपण धार्मिक बनावयास पाहिजे.

आपण शिकलो म्हणजे सर्वकाही झाले असे नाही. शिक्षणाबरोबरच माणसाचे शीलही सुधारले पाहिजे. शीलाशिवाय शिक्षणाची किंमत केवळ शून्य आहे. ज्ञान हे तरवारीसारखे आहे. समजा, एखाद्या माणसाच्या हाती तरवार आहे. तिचा सदुपयोग की दुरुपयोग करावयाचा हे त्या माणसाच्या शीलावर अवलंबून राहील. तो त्या तरवारीने एखाद्याचा खूनही करील किंवा एखाद्याचा बचावही करील. ज्ञानाचेही तसेच आहे. एखादा शिकलेला माणूस त्याचे शील चांगले असेल तर आपल्या ज्ञानाचा उपयोग लोकांचे कल्याणासाठी करील. परंतु त्याचे शील चांगले नसेल तर तो आपल्या ज्ञानाचा उपयोग लोकांचे अकल्याण करण्याकडे ही खर्च करील.

शील हे धर्माचे मोठे अंग आहे. शिकलेली माणसे नुसती पोटभरु असून भागणार नाही. ज्यांना स्वार्थापलीकडे काही दिसत नाही, ज्यांना थोडाही परार्थ करता येत नाही, ती माणसे नुसती शिकली म्हणून काय झाले? त्यांचा दुसऱ्याला उपयोग तो काय? तव्याचा जाय बुरसा, मग तो सहजच होय आरसा. शिक्षणाचा उपयोग असा झाला पाहिजे.

- डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर ( सन् १८९१-१९५६ )

(स्त्रोत : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची भाषणे, खंड सहावा.)

## अब्राहम लिंकनचे हेडमास्तरास पत्र

प्रिय गुरुजी  
सगळीच माणसे न्यायप्रिय नसतात  
नसतात सगळीच सत्यनिष्ठ  
हे शिकेलच माझा मुलगा कधी ना कधी,  
मात्र त्याला हे देखील शिकवा  
जगात प्रत्येक बद्माषागणिक  
असतो एक साधुचरित पुरुषोत्तमही.  
स्वार्थी राजकारणी असतात जगात  
तसे असतात अवघं आयुष्य समर्पित करणारे नेतेही.  
असतात टपलेले वैरी तसे जपणारे मित्रही.

मला माहित आहे  
सगळ्या गोष्टी इटपट नाही शिकवता येत -----,  
तरीही जमलं तर त्याच्या मनावर ठसवा,  
घाम गाळून कमावलेला एकच छदाम  
आयत्या मिळालेल्या घबाडापेक्षा मौल्यवान आहे.

हार कशी स्वीकारावी ते त्याला शिकवा  
आणि शिकवा विजयाचा आनंद संयमानं घ्यायला.  
तुमच्यात शक्ती असली तर  
त्याला द्वेषमत्सरापासून दूर रहायला शिकवा.  
शिकवा त्याला आपला हर्ष संयमानं व्यक्त करायला

गुंडांना भीत जाऊ नको म्हणावं,  
त्यांना नमवणं सर्वात सोपं असतं !

जमेल तेवढं दाखवीत चला त्याला  
ग्रंथभांडाराचं अद्भुत वैभव, मात्र त्यावरोबरच,

मिळू दे त्याच्या मनाला निवांतपणा  
 सृष्टीचे शाश्वत सौंदर्य अनुभवायला  
 पाहू दे त्याला, पक्ष्यांची अस्मानभरारी-----  
 सोनेरी उन्हात भिरभिरणारे भ्रमर-----  
 आणि हिरव्यागार डोंगरउतारावर  
 झुलणारी चिमुकली फुलं.

शाळेत त्याला हा धडा मिळू दे -  
 फसवून मिळविलेल्या यशापेक्षा  
 सरळ आलेलं अपयश श्रेयस्कर आहे.

आपल्या कल्पना, आपले विचार  
 यांच्यावर दृढ विश्वास ठेवायला हवा त्यानं,  
 बेहेत्तर आहे सर्वांनी त्याला चूक ठरवलं तरी.  
 त्याला सांगा, त्यानं भल्यांशी भलाईनं वागावं  
 आणि टग्यांना अददल घडवावी.

माझ्या मुलाला हे पटवता आलं तर पहा  
 जिकडे सरळी तिकडे धावत सुटणाऱ्या  
 भाऊ गर्दीत सामील न होण्याची ताकद  
 त्यानं कमवायला हवी.  
 पुढे हेही सांगा त्याला, एकावं जनांचं, अगदी सर्वांचं-----  
 पण गाळून घ्यावं ते सत्याच्या चाळणीतून,  
 आणि फोलपट टाकून  
 निकं सत्व तेवढ स्वीकारावं.  
 जमलं तर त्याच्या मनावर बिंबवा  
 हसत रहावं उरातलं दुःख दाबून,  
 आणि म्हणावं त्याला, आसू ढाळायची लाज वाटू देऊ नको.  
 त्याला शिकवा, तुच्छतावाच्यांना तुच्छ मानायला  
 अन् चाटूगिरीपासून सावध राहायला.

त्याला हे पुरेपूर समजवा की  
 करावी कमाल कमाई त्याने  
 ताकद आणि अक्कल विकून  
 पण कधीही विक्रय करू नये, हृदयाचा आणि आत्म्याचा !  
 धिक्कार कारणाच्यांच्या झुंडी आल्या तर  
 कानाडोळा करायला शिकवा त्याला,  
 आणि ठसवा त्याच्या मनावर  
 जे सत्य आणि न्याय्य वाटते  
 त्याच्यासाठी पाय रोबून लढत रहा.

त्याला ममतेनं वागवा पण, लाडावून ठेबू नका .  
 आगीत तावून सुलाखून निघाल्याशिवाय  
 लोखंडाचं कणखर पोलाद होत नसतं  
 त्यांच्या अंगी बाणवा, अधीर व्हायच धैर्य,  
 अन् धरला पाहिजे धीर त्यानं  
 जर गाजवायचं असेल शौर्य.  
 आणखीही एक सांगत रहा त्याला  
 आपला दृढ विश्वास पाहिजे आपल्यावर  
 तरच जडेल उदात्त श्रध्दा मानवजातीवर.

माफ करा गुरुजी ! मी फार बोलतो आहे.  
 खूप काही मागतो आहे-----  
 पण पहा -- जमेल तेवढं अवश्य कराच.  
 माझा मुलगा -  
 भलताच गोड छोकरा आहे हो तो.

अनुवाद - वसंत बापट

## रेड इंडियनचा दस्तऐवज

एकोणिसाब्या शतकाच्या सुरुवातीला खूप मोठया संख्येने अमेरिकेत लोक जाऊ आपल्या वसाहती करत होते. तेथील मूळ रहिवासी रेड इंडियन लोकांच्या पश्चिमी डोंगरी विभागात हे लोक त्याच्या जमिनी आपआपल्या परिने हडप करित होते. मूळ स्थानिक लोकांमधे गोंधळ उडालेला होता आणि त्यांची मूळ संस्कृती उध्वस्त केली जात होती. १८५४ मधे संयुक्त अमेरिकेच्या राष्ट्राध्यक्षाने काही भाग त्यांच्या साठी स्वतंत्र आणि सुरक्षित राखून बाकी जमीन खरेदी करण्याचा प्रस्ताव त्यांच्या तोडीच्या सरदारापुढे ठेवला होता. त्या सरदाराने त्याला जे उत्तर दिले ते ह्या पृथ्वी आणि पर्यावरण ह्याचे महत्व दाखविणारे मोठे सुंदर उदाहरण आहे.

आकाश आणि जमीन (भूमाता) ह्यांचा स्नेह आपण कसे विकू अगर खरेदी करू शकतो ? आमच्या दृष्टीने ही कल्यनाच मोठी अजब आहे. हवेचा ताजेपणा आणि पाण्याचा निखळपणा , आम्ही मानो ना मानो , त्याला घेण्याचा आमचा हक्कच कोठे आहे ? त्याला आम्ही कसे काय विकू शकू ? या नदी - नाल्यातून वाहणारे पाणी हे केवळ पाणीच नाही तर आमच्या पूर्वजांचे रक्त आहे. ही जमीन जर आम्ही विकली तर आमच्या मुलांना शिकवावे लागेल कि या भूमीला पवित्र माना. तलावाच्या स्वच्छ पाण्यात आमच्या पूर्वजांच्या जीवन घटनांचे प्रतिबिंब आहे आणि वाहत्या पाण्याच्या खळखळाटात आमच्या आजी आजोबांचे आवाज आहे . या नद्या आमच्या बहिणी आहेत. त्या आमची तहान भागवितात. आमच्या बायका हिच्या आंगाखांदावरून खेळतात आणि हिच आमच्या मुलांचे पोट देखील भरते. या भूमीला, जमिनीला जर आम्ही विकू तर आमच्या मुलांना शिकवावे लागेल कि बाबांनो या नदीसाठी तेच प्रेम द्या कि जे तुम्ही बहिणीसाठी देता.

आमच्या पध्दती आपल्यापेक्षा खूप वेगळ्या आहेत. तुमच्या शहराकडे पाहून आम्ही अस्वस्थ होतो, ते केवळ एवढ्याच करिता कि आमची संस्कृती असभ्य आहे आणि तुमची संस्कृती आम्ही समजू शकत नाही. गोऱ्या लोकांच्या शहरात कोठेही शांतता नाही. वसंत क्रतूच्या उमलण्याला किंवा कीऱ्यांचा फडफडाट ऐकायला तेथे कोणतीही जागा नाही. कदाचित मी असभ्य ग्राम्य माणूस असेन आणि तुमच्या संस्कृतीला अपरिचीत असा असेन पण माझ्या कानांना आपल्या शहरांचा गोँगाट हा अपमानास्पद वाटतो. जर मनुष्याला कोकीळेचे गाणे एकांतात ऐकता येत नसेल तर अशा हया जीवनाचा काय फायदा आहे? आम्हाला रात्री मेंढऱ्यांच्या न संपणाऱ्या गोष्टी ऐकत झोपण्याची सवय आहे. तलावावरून येणारा शांत मृदू हवेचा आवाज आणि पावसानंतर देवदार झाडांच्या पानाचा वास घेऊ येणारी हवा ही आम्हाला अधिक आवडते आम्हाला माहित आहे की पृथ्वी ही माणसाची नाही तर माणूस पृथ्वीचा आहे. मनुष्याने जीवनाचा ताणा-बाणा बनविलेला नाही तर तो त्याचा एक धागा आहे. तो जर या ताण्या-बाण्याला नष्ट करू पाहिल तर तो स्वतःलाच नष्ट करेल.

वचन द्या की तुम्ही आणि तुमची मुले या जंगलाच्या शांतीचा भंग करणार नाहीत. वचन द्या की तुम्ही आणि तुमची मुले ही हवा आणि पाणी खराब करणार नाहीत. वचन द्या की तुम्ही आणि तुमची मुले या धरतीचा चेहरा खराब करणार नाहीत. वचन द्या की तुम्ही आणि तुमची मुले आपल्या पशूपक्षी बांधवांना नष्ट करणार नाहीत. हीच किंमत या भूमीची आहे कि जी आम्हाला पाहिजे आहे.

(स्त्रोत - रेड इंडीयनचा दस्तऐवज)

## क्रान्तिप्रवण तरुण

तरुणबर्गाचे विचार नेहमी ताजे व तेजस्वी असतील. आमचे जीवन त्यांना जुनाट व जीर्ण वाटेल. कदाचित आमचे विचारही शिळे वाटतील. मी जर तुम्हाला कालचा माणूस वाटलो, कालच्या गोष्टी सांगणारा भासलो, तर त्यात तुमच्या तारुण्याचा गौरवच आहे. ज्याला जुनाट विचारांचा जुनाटपणा दिसत नाही तो कसला तरुण? पण जुन्यातही जो टिकाऊ भाग असतो तो त्याला पाहता आला पाहिजे. ज्याला दृष्टीची विवेकयुक्त नवीनता लाभली तो तरुण. तरुणाला मृत्यूतही जीवनाची बीजे दिसतात. निराशेच्या विरविरीत बुरख्यामागे दडलेला आशेचा टवटवीत चेहरा त्याला दिसतो. मृत्यूतून जीवनरस शोषून घेण्याची अपूर्व कला त्याला साधलेली असते. जीवननिष्ठा म्हणजे जीवन लोलुपता नव्हे. जिवंत राहण्याचा निश्चय म्हणजे जगण्याचा मोह नव्हे. तरुणांची जिवननिष्ठा अदम्य असते. अजिंक्य असते.

तरुणांचा हिन्दुस्थान कधीच मरणार नाही. तो जगात आपले नाव गाजविणार आहे. हाच हीन, दलित, वंचित हिन्दुस्थान इतर राष्ट्रांना कित्ता घालून देण्याइतका थोर होणार आहे. अशी ज्याची अमर जीवन-भावना तो तरुण! पराक्रम हा माणसाचा जन्मसिद्ध आणि खास अधिकार आहे. नारायण म्हणजे नराचे सामर्थ्यवान स्वरूप. नुसत्या नरात काही जीव नसतो.

पशुकी होत पन्हैयां, नरका कछू नही होय !

नर जो करनी करे तो नर का नारायण होय !

आज गरिबांच्या ठिकाणी गरिबी असेल, पण दैन्य असता कामा नये. जे थे गरिबी असूनही दीनता नसेल ते थे सामर्थ्य उत्पन्न होते. ज्याप्रमाणे जीवननिष्ठा म्हणजे जीवनलोलुपता नव्हे, त्याप्रमाणे ऐश्वर्यभावना म्हणजे वैभव-लोलुपता नव्हे, सुखाचा हपाप नव्हे.

उपनिषदात क्रांतिकारी तारुण्याची लक्षणे सांगितली आहेत. युवास्यात साधु, युवाध्यायक आशिष्ठो द्रढिष्ठो बलिष्ठ | तस्येसम् पृथ्वी सर्वा वितस्य पूर्णस्यात्-तरुण साधू असावा. अध्ययनशील असावा, आशावान असावा, बलवान असावा. म्हणजे त्याच्याकरता सगळी पृथ्वी संपत्तीने भरलेली अशी होईल. हा उपनिषदातील क्रषींचा संदेश आहे. साधू म्हणजे सरळ मनाचा. साधू

म्हणजे राखडमाळ्या नव्हे. युवाध्यायक म्हणजे त्याचे शील सगळ्या पृथ्वीतून ज्ञान घेण्याचे असावे. हीच विद्यार्थी हष्टी. विद्यार्थ्याला सर्वत्र ज्ञान भरलेले दिसते. विद्यार्थ्याच्या दिव्य श्रद्धेमुळे ओढे, दगड, झाडाची पाने, म्हणजे अखिल चराचर सृष्टी. बोलू लागते. या हष्टीला आस्तिक हष्टी म्हणतात. आस्तिकतेची पराकाष्ठा म्हणजे तारुण्य.

तो द्रढिष्ठ ही असावा. मनाचा मजबूत असावा. कनवाळू असला तरी खंबीर असावा. हढनिश्वयी असावा. आपण जे ठरविले तेच सत्य आहे. तेच हितकर आहे. तेच प्रसंगाला आवश्यक आहे, असे एकदा ठरल्यानंतर मग त्यापासून तो डगमगत नाही. बलिष्ठ म्हणजे बळकट.

श्रमावाचून सुखसाधनांची रेलचेल झाली तर मनातील भूतांचा नंगानाच सुरु होईल. साधनांच्या गर्दीत जीव गुदमरून जाईल, सुख लोपून जाईल, मानव्य हरपून जाईल. यंत्रवादाचे प्रस्थ माजेल, आणि माणसाचा पत्ता लागणार नाही.

सुवर्णयुगापेक्षाही मानवाचे युग श्रेष्ठ आहे. सत्तेच्या युगापेक्षा सत्ययुग अधिक मंगलकारक आहे. सत्ययुगात माणसाची सत्ता चालणार नाही, माणूस विकला जाणार नाही. त्याला कुणी वर्गहीन समाज म्हणोत, आम्ही त्याला मानवाचे स्वराज्य म्हणतो. अशा मानवतेच्या युगाच्या निर्मितीसाठी तुमच्या अंगी तारुण्यसुलभ व तारुण्योचित गुण बाणले पाहिजेत. ते गुण म्हणजे तेजस्विता, तपस्विता व तत्परता. हे तारुण्याचे तीन त कार म्हणता येतील. तेजस्विता म्हणजे वीरवृत्ती. वीरवृत्ती म्हणजे प्रतिकारनिष्ठा. प्रतिकाराचे व्रत घेण्याची वृत्ती. तपावाचून तेज उत्पन्न होणे शक्य नाही. तेज व तप यांच्या जोडीला तत्परताही हवी. तत्परता म्हणजे पत्करलेल्या कार्याशी तदाकार होण्याची वृत्ती. घेतलेल्या कामात गदून जाण्याची आणि त्यासाठी इतर कामे बाजूला सारून नेहमी तयार असण्याची सवय असली पाहिजे. माणुसकीचे हे गौरीशंकर आपल्याला गाठावयाचे आहे. आपल्याला मानव्याचा संसार थाटावयाचा आहे. हेच आपल्या क्रांतीचे उद्दिष्ट आहे...

-आचार्य दादा धर्माधिकारी

(स्त्रोत : कार्यकर्ता शिविरातील समारोपाचे भाषण, द्वारा: श्री.चंद्रशेखर धर्माधिकारी)

## कबीर वाणी

दुःख में सुमिरन सब करै, सुख में करै ना कोय ।  
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय ॥

जाति न पूछो साधू की पूछ लीजिए ज्ञान ।  
मोल करो तलवार का पड़ी रहन दो म्यान ॥

जो तोको काटा बुवै ताहि बोव तू फूल ।  
तोहिं फूल को फूल है वाको है तिरसूल ॥

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँव ।  
बलिहारी गुरु आपनो, जिन गोविन्द दियो बताय ॥

गोधन, गजधन, बाजिधन और रतन धन खान ।  
जब आवै सन्तोष धन, सब धन धूरि समान ॥

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोय ।  
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ॥

निंदक नियरे रखिए, आँगन कुटी छवाय ।  
बिन साबण पाणी बिना, निरमल करै सुभाय ॥

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।  
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर ॥

- कबीरदास

## वैष्णव जन

वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे पीड़ पराई जाणे रे,  
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे ।  
वैष्णव जन तो तेने कहिए ॥

सकल लोकमां सहुने वन्दे, निन्दा न करे केनी रे,  
वाचकाछ मन निश्चल राखे, धन-धन जननी तेनी रे ।  
वैष्णव जन तो तेने कहिए ॥

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे,  
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे ।  
वैष्णव जन तो तेने कहिए ॥

- नरसी मेहता

## हे नम्रता के सम्राट

हे नम्रता के सम्राट  
दीन भंगी की हीन कुटिया के निवासी ।  
गंगा, यमुना और गोदावरी के जलों से सिंचित  
इस सुंदर देश में ।

तुझे सब जगह खोजने में हमें मदद दे ।  
हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे ।  
तेरी अपनी नम्रता दे ।  
भारत की जनता से एकरूप होने की  
शक्ति और उत्कंठा दे ।  
हे भगवन् ।

तू तभी मदद के लिए आता है, जब मनुष्य  
शून्य बनकर तेरी शरण लेता है ।  
हमें वरदान दे ।  
कि सेवक और मित्र के नाते जिस जनता की  
हम सेवा करना चाहते हैं ।  
उससे कभी अलग न पड़ जाय ।  
हमें त्याग, भक्ति और नम्रता की मूर्ति बना  
ताकि, इस देश को हम ज्यादा समझे और ज्यादा चाहे ।  
हे भगवन् ।

- म.गांधी

## सात सामाजिक पातक

तत्वविहीन राजनीति  
सदासद् विवेकविहीन विलास  
श्रमविहीन सम्पत्ति  
मानवताविहीन विज्ञान  
नीतिविहीन व्यापार  
त्यागविहीन पूजा  
चारित्र्यविहीन शिक्षा ...

- म.गांधी

## माटी का दिया

दिवसावसान का समय,  
लोहित वर्ण  
हो चला था नभ मंडल  
अस्त होते भास्कर ने  
कहा दर्प के साथ  
मेरा काज करेगा कौन ?  
रह गया जगत सारा  
नि रु त र मौन ...

एक माटी के दिये ने  
कहा नम्रता के साथ  
जितना भी हो सकेगा  
मैं करूँगा नाथ ।

- रविंद्रनाथ ठाकुर

## हमारा मिशन

हम किसी भी देश विशेष के अभिमानी नहीं ।  
किसी भी धर्म विशेष के आग्रही नहीं ।  
किसी भी सांप्रदाय में या जाति विशेष में बद्ध नहीं ।  
विश्व में उपलब्ध सद्विचारों के उद्यान में  
विहार करना यह हमारा स्वाध्याय ।  
सद्विचारों को आत्मसात् करना  
यह हमारा धर्म ।  
विविध विशेषताओं में सामंजस्य प्रस्थापित करना  
विश्व वृत्ति का विकास करना  
यह हमारी वैचारिक साधना ।

- विनोबा

## राष्ट्रवंदना

तन मन धन से सदा सुखी हो, भारत देश हमारा ।  
सभी धर्म अरू पंथ पक्ष को, दिल से रहे पियारा ।  
विजयी हो, विजयी हो, विजयी हो, भारत देश हमारा ॥

निर्भय हो यह देश की माता मंगल कीर्ति कराने ।  
सत्य-शील अरू निर्मल मन से, वीरों को उपजाने ।  
सद्गुणी हो यह देश की जनता, जीवन सुख सजवाने ।

रंक, राव, पंडित, भिखारी, सबको सुख दिलवाने ।  
विजयी हो, विजयी हो, विजयी हो भारत देश हमारा ॥१ ॥

स्पृश्यास्पृश्य हटे यह सारा, देश कलंक मिटाने ।  
सब के मन कर्तव्य शील हो, धन उद्योग बढ़ाने ।  
सबका हो विश्वास प्रभू पर, अपनी शक्ति बढ़ाने ।  
ब्रह्मचर्य, अध्यात्म दैवीगुण, घर-घर में प्रगटाने ।  
विजयी हो, विजयी हो, विजयी हो भारत देश हमारा ॥२ ॥

सारा भारत रहे सिपाही, शत्रू को दहशाने ।  
तुकड्यादास कहे स्फूर्ति हो, सबको भक्ति कराने ।  
विजयी हो, विजयी हो, भारत देश हमारा ॥३ ॥

- तुकड्यादास

## जीवन

जीवन विफलताओं से भरा है,  
सफलताएँ जब कभी आई निकट,  
दूर ठेला है उन्हें निज मार्ग से ।  
तो क्या यह मूर्खता थी ?  
नहीं !

सफलता और विफलता की  
परिभाषाएँ भिन्न हैं मेरी ।  
मुझ क्रांति शोधक के लिए  
कुछ अन्य ही पथ मान्य थे, निर्दिष्ट थे  
पथ त्याग के, सेवा के, निर्माण के  
पथ संघर्ष के सम्पूर्ण क्रांति के ।  
जग जिन्हें कहता विफलता  
थी शोध की वे मंजिले ।  
मंजिले वे अनगिनित हैं,  
गंतव्य भी अति दूर है ।  
रुकना नहीं मुझको कहीं  
अवरुद्ध जितना मार्ग हो ।  
  
निजकामना कुछ है नहीं  
सब है समर्पित ईश को ।  
तो विफलता पर तुष्ट हूँ अपनी  
और यह विफल जीवन  
शत शत धन्य होगा  
यदि समान धर्मा प्रिय तरूणों का  
कंटकाकीर्ण मार्ग  
यह कुछ सुगम बना जावे ।

- जयप्रकाश नारायण

## विविधता में एकता

विविधता में एकता का गान ही गौरव हमारा,  
शान भारत की यही है युगों से सौरभ हमारा ॥  
प्रेम के जलकण पिरोकर रजत रश्मि सुरंग भरती,  
सप्तरंगों की छटा से जगत को सम्पन्न करती,  
भरत का यह देश है रंगीन समता का सरोवर,  
भिन्न भाषाओं, विधर्मों, जातियों का धर धरोहर ॥१॥

यदि कभी भ्रम भूल से हम विविधता का ऐक्य खोयें,  
धर्म, भाषा, भेद का चक्कर चला विषबीज बोयें,  
छिन्न होगी भिन्न होगी राष्ट्र की गरीमा पुरातन,  
बिखरकर रज में मिलेगी हिन्द की महिमा सनातन,  
गुरुदेव गांधी देश का मस्तक कभी नीचा न हो,  
विविधता में एकता का स्वर सदा ऊँचा रहे, प्रभु ॥२॥

-आचार्य श्रीमन्नारायण

## राष्ट्र तरु फूले फले

है आसान देव बन जाना, बड़ा कठिन बनना इन्सान;  
पूजा जाना सदा सुलभ है, पूजा करना कला महान!  
कहते हैं ईश्वर ने तुझको, रूप दिया निज रूप समान;  
मानव! तेरी शक्ति अतुल, तू ढाल सके नूतन भगवान!  
आप भले तो जग भला, यह अनुभव का सार;  
दर्पण-सा बिम्बित करे, जग जन भाव विचार।  
फूलों के प्रति प्रेम दिखाना, सभी जानते जग में यार;  
काँटों से भी प्रीति निभाना, फूलों से सीखें सुखसार।  
जीत, हार कुछ भी मिले, रखना अपनी आन;  
डटा रहे निज वचन पर, नर की यह पहचान।  
नाम की इच्छा नहीं, व्यक्तित्व मिट्टी में मिले;  
बीज-सा मैं मर मिट्टूँ, पर राष्ट्र तरु फूले फले।

-आचार्य श्रीमन्नारायण

## लहरों का निमंत्रण

आज अपने स्वप्न को मैं सच बनाना चाहता हूँ  
दूर की इस कल्पना के पास जाना चाहता हूँ  
चाहता हूँ तैर जाना सामने अंबुधि पड़ा जो  
कुछ विभा उस पार की इस पार लाना चाहता हूँ  
स्वर्ग के भी स्वप्न भू पर देख उनसे दूर ही था  
किंतु पाउंगा नहीं कर आज अपने पर नियंत्रण  
तीर पर कैसे रुकूं मैं आज लहरों में निमंत्रण ॥

लौट आया यदि वहां से तो यहां नवयुग लगेगा  
नवप्रभा की गान सुनकर भाग्य जगती का जगेगा  
शुष्क जडता शीघ्र बदलेगी सरस चैतन्यता में  
यदि न पाया लौट मुझको लाभ जीवन का मिलेगा  
पर पहुँच ही यदि न पाया व्यर्थ क्या प्रस्थान होगा ?  
कर सकूंगा विश्व में फिर भी नये पथ का प्रदर्शन  
तीर पर कैसे रुकूं मैं आज लहरों में निमंत्रण ॥

पोत अगनित इन तरंगोने डुबाए मानता मैं  
पार भी पहुँचे बहुत से बात यह भी जानता मैं  
किंतु होता सत्य यदि यह भी, सभी जलयान डूबे  
पार जाने की प्रतिज्ञा आज बरबस ठानता मैं  
डूबता मैं, किंतु उतराता सदा व्यक्तित्व मेरा,  
हो युवक डुबे भले ही, है कभी डूबा न यौवन  
तीर पर कैसे रुकूं मैं आज लहरों में निमंत्रण ॥

- हरिवंशराय बच्चन

## मानव और देश

बात स्कूल की है -  
लकड़ी के टूकड़ों में बना  
देश का नक्शा दिया जाता था।  
उसे जोड़कर देश बनाने का  
टेस्ट लिया जाता था।  
कठिन होता था उसे बनाना  
भारत के हर खंड को पहचाने बिना मिलाना।  
लेकिन -  
लकड़ी की दूसरी ओर मानव का निशान था।  
उसे मिलाना भी आसान था।  
मानव बनाकर उलट देने से  
देश बन जाता था।  
आज का जीवित जटिल प्रश्न  
बचपन में आसान नजर आता था।  
गांधी के बाद हर कोई टुकड़ो को मिला रहा है,  
परंतु, देश नहीं बन पा रहा है।  
जब तक समाज के लिए जीने वाले  
मानवीय चरित्रों का  
समाजीकरण नहीं हो जाएगा,  
राष्ट्र का सही चित्र नहीं बन पाएगा।

- सीताशरण शर्मा

## गांधी जी का जन्तर

मैं तुम्हें एक जन्तर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ –

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ति याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा? क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हो और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

— एम. के. गांधी

## अध्यात्म

इस देश का अध्यात्म बूढ़ों का नहीं जवानों का विषय रहा है। जब ऋषिकेश ने जीवन के कुरुक्षेत्र में अपने अपूर्व अध्यात्म का पांचजन्य फूँका था तो वे वृद्ध नहीं युवा थे और वे थे सारथि भारत की उत्कृष्ट तरुणाई के रथ के। जब अपनी प्रिया की गोद में नवजात राहुल को छोड़ सिद्धार्थ अपनी सांस्कृतिक क्रांति के पथ पर चल पड़े थे, तब वे वृद्ध नहीं, युवा थे। अद्वैत के अन्यतम शोधक शंकर ने जब अपनी दिग्विजय यात्रा की थी, तब वे वृद्ध नहीं, युवा थे। विवेकानंद ने शिकागो के रंगमंच पर जब वेदांत के सार्वभौम धर्म का उद्घोष किया था, तब वे वृद्ध नहीं, युवा थे। महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रिका में रंगभेद के दावानल में जब अध्यात्म का आग्रेय प्रयोग किया था, तब वे वृद्ध नहीं, युवा थे।

नहीं मित्रों ! अध्यात्म बुढ़ापे की बुड़भस नहीं, तरुणाई की उत्तुंगतम उड़ान है।

— जयप्रकाश नारायण

## अहिंसा

अहिंसा का तत्त्व बहूत गहन है इसको जीवन में उतारना बड़ा ही कठीन है। इसको ठीक न समझने के कारण ही कुछ लोग इसकी शक्ति और मर्यादा की हंसी उड़ाते हैं। वे कहते हैं कि इसके द्वारा आदमी कमजोर हो जाता है। इस विषय पर विचार करते समय पहली बात यह मान लेनी चाहिए कि हिंसा में कायरता है, अहिंसा में नहीं। जहां कायरता आ गयी वहां अहिंसा रह नहीं सकती। हम यदि अपने प्रतिपक्षी से डरते हैं और उस डर से उसका नुकसान नहीं करना चाहते हैं तो इसमें अहिंसा कैसे हो सकती है? अहिंसा उसी में रह सकती है जो ये महसूस करता है कि क्षति पहुंचाना ही बुरा है, दुसरे को दुःख देना अन्याय है और इसी विश्वास से वह दुःख पहुंचाने से हिचकता है। उसकी यह प्रवृत्ति उसकी क्षति पहुंचाने की शक्ति पर निर्भर नहीं रहती।

यदि यह कहा जाये कि इसप्रकार की सहनशक्ति मनुष्य में, विशेष करके जनसाधारण में पैदा करना मुश्किल है तो इतना ही कहना काफी होगा कि जो लोग लड़ाई में अस्त्र में शस्त्र से लड़ते हैं उनमें भी तो साधारण श्रेणी के ही लोग रहते हैं। जिनको अगर यों ही छोड़ दिया जाये तो उतनी बहादुरी नहीं दिखला सकते जो वे रणभूमि में दिखलाते हैं। केवल अभ्यास और अध्यवसाय की जरूरत है। फौज के सिपाही की बहादुरी भी अभ्यास द्वारा ही पैदा की जाती है। पर वह बहादुरी भय पर अवलंबित है - प्रतिपक्षी को मारना ही चाहिये नहीं तो वह मार डालेगा। प्रतिपक्ष द्वारा मारे जाने का भय ही एक अत्यंत जबरदस्त कारण बहादुरी का होता है। अहिंसात्मक बहादुरी भी इसी तरह अभ्यास चाहती है। सशस्त्र सेना में शारीरिक ताकत आवश्यक होती है और इसलिए बूढ़े, कम उम्र के बच्चे और बहुत अंश में स्त्रियां उसके योग्य नहीं समझी जाती। अहिंसात्मक सेना में बूढ़े, बच्चे, स्त्रियां और यहां तक कि अंधे, लूले, लंगड़े भी शारिक हो सकते हैं। क्योंकि इसमें शारीरिक शक्ति इतनी आवश्यक नहीं है - मानसिक दृढ़ता और आत्मबल ही काफी है।

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद

## मनुष्य का निर्माण

सारी शिक्षा, समस्त प्रशिक्षण का एकमेव उद्देश्य मनुष्य का निर्माण होना चाहिए। पर हम यह न करके केवल बहिरंग पर ही पानी चढ़ाने का प्रयत्न किया करते हैं। जहाँ व्यक्तित्व का ही अभाव है, वहाँ सिर्फ बहिरंग पर पानी चढ़ाने का प्रयत्न करने से क्या लाभ? सारी शिक्षा का ध्येय है - मनुष्य का विकास। वह मनुष्य, जो अपना प्रभाव सब पर डालता है, जो अपने संगियों पर जादू-सां कर देता है, शक्ति का एक महान् केन्द्र है और जब वह मनुष्य तैयार हो जाता है, वह जो चाहे कर सकता है। यह व्यक्तित्व जिस वस्तु पर अपना प्रभाव डालता है, उसी को कार्यशील बना देता है।

यदि तुम सचमुच किसी मनुष्य के चरित्र को जाँचना नाहते हो, तो उसके बड़े कार्यों पर से उसकी जाँच मत करो। हर मूर्ख किसी विशेष अवसर पर बहादुर बन सकता है। मनुष्य के अत्यन्त साधारण कार्यों की जाँच करो और असल में वे ही ऐसी बातें हैं, जिनसे तुम्हें एक महान् पुरुष के वास्तविक चरित्र का पता लग सकता है। आकस्मिक अवसर तो छोटे-से-छोटे मनुष्य को भी किसी-न-किसी प्रकार का बड़प्पन दे देते हैं। परन्तु वास्तव में महान् तो वही है, जिसका चरित्र सदैव और सब अवस्थाओं में महान् तथा सम रहता है।

- स्वामी विवेकानन्द

# सत्य की खोज

साबरमती जेल, गुरुवार की रात १७-३-१९२२

चिरंजीव जमनालाल,

जैसे-जैसे मैं सत्य की शोध करता जाता हूँ, मुझे प्रतीत होता है कि उसमें सब कुछ आ जाता है। प्रायः यह प्रतीत होता रहता है कि अहिंसा में वह नहीं है परन्तु उसमें अहिंसा है। निर्मल अंतःकरण को जिस समय जो प्रतीत होता है वह सत्य है। उस पर दृढ़ रहने से शुद्ध सत्य की प्राप्ति हो जाती है। इसमें मुझे कहीं धर्मसंकट भी मालूम नहीं होता। लेकिन अहिंसा का निर्णय करने में प्रायः कठिनाई का अनुभव होता है। जन्तुनाशक पानी का उपयोग भी हिंसा है। हिंसामय जगत् में अहिंसामय बनकर रहने की बात है। सो तो सत्य पर दृढ़ रहने से ही हो सकता है। इसलिए मैं तो सत्य में ही अहिंसा को फलित कर सकता हूँ। सत्य से प्रेम की प्राप्ति होती है। सत्य से मृदुता मिलती है। सत्यवादी सत्याग्रही को नितान्त नम्र होना चाहिए। जितना उसका सत्य बढ़ेगा उतना ही वह नम्र बनता जाएगा। मैं प्रतिक्षण इसका अनुभव कर रहा हूँ। इस समय सत्य का मुझे जितना ख्याल है उतना एक वर्ष पहले न था और इस समय मैं अपनी अल्पता को जितना अनुभव कर रहा हूँ उतना एक साल पहले नहीं कर पाता था।

‘ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या’ मेरी दृष्टि में इस कथन का चमत्कार दिनोंदिन बढ़ता जाता है। इसलिए हमें सदैव धैर्य रखना चाहिए। धैर्य पालन से हमारी कठोरता कट जाएगी। कठोरता के न रहने पर हममें सहिष्णुता बढ़ेगी। अपने दोष हमें पहाड़ से प्रतीत होंगे और संसार के राई से। शरीर की स्थिति अहंकार को लेकर है। जिसके अहंकार का सर्वथा लोप हुआ है वह मूर्तिमन्त सत्य बन जाता है।

स्त्री, पुत्र, मित्र, परिग्रह सब कुछ सत्य के अधीन रहना चाहिए। जो सत्य की शोध में इन सब का त्याग करने को तत्पर रहता है वही सत्याग्रही बन सकता है।

तुम पाँचवें पुत्र तो बने ही हो, किन्तु मैं तुम्हारे योग्य बनने का प्रयत्न कर रहा हूँ। दत्तक लेनेवाले का दायित्व कोई साधारण दायित्व नहीं है। ईश्वर मेरी सहायता करे और मैं इसी जन्म में उसके योग्य बनूँ।

- बापू के आशीर्वाद

## बुनियादी तालीम

अन्य देशों के बारे में कुछ भी सही हो, कम-से-कम भारत में तो जहाँ अस्सी फीसदी आबादी खेती करनेवाली है और दूसरी दस फिसदी उद्योगों में काम करनेवाली है। शिक्षा को निरी साहित्यिक बना देना तथा लड़कों और लड़कियों को उत्तर-जीवन में हाथ के काम के लिए अयोग्य बना देना गुनाह है। . . . चूँकि हमारा अधिकांश समय अपनी रोजी करमाने में लगता है, इसलिए हमारे बच्चों को बचपन से ही इस प्रकार के परिश्रम का गौरव सिखाना चाहिए। हमारे बालकों की पढ़ाई ऐसी नहीं होनी चाहिए, जिससे वे मेहनत का तिरस्कार करने लगें।

मेरा मत है कि बुद्धि की सच्ची शिक्षा हाथ, पैर, आँख, कान, नाक आदि शरीर के अंगों के ठीक अभ्यास और शिक्षण से ही हो सकती है। दूसरे शब्दों में, इन्द्रियों के बुद्धिपूर्वक उपयोग से बालक की बुद्धि के विकास का उत्तम और शीघ्रतम् मार्ग मिलता है। परन्तु जब तक मस्तिष्क और शरीर का विकास साथ-साथ न हो और उसी प्रमाण में आत्मा की जाग्रत्ति न होती रहे, तब तक केवल बुद्धि के एकांगी विकास से कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। आध्यात्मिक शिक्षा से मेरा आशय हृदय की तालीम से है। इसलिए मस्तिष्क का ठीक और चतुर्मुखी विकास तभी हो सकता है, जब वह बच्चे की शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियों की तालीम के साथ-साथ होता हो। ये सब बातें एक और अविभाज्य हैं। इसलिए इस सिद्धान्त के अनुसार यह मान बैठना बिलकुल गलत होगा कि उनका विकास टुकड़े करके या एक-दूसरे से स्वतंत्र रूप में किया जा सकता है।

- मो. क. गांधी

## योग-उद्योग-सहयोग

शिक्षण में तीन चीजें सीखनी चाहिए । एक है योग, दूसरा उद्योग और तीसरा सहयोग । ये शिक्षण के मुख्य तीन विषय हैं। योग का अर्थ आसन लगाना नहीं है । योग यानी चित्त पर अंकुश कैसे रखना, इंद्रियों पर सत्ता कैसे रखना । इसकी आज बहुत आवश्यकता है । प्रज्ञा स्थिर करना योग का मुख्य विषय है ।

शिक्षा का दूसरा विषय है, उद्योग । शिक्षा में मुख्य दृष्टि गुण विकास की होनी चाहिए । परंतु बिना उद्योग के न गुण का विकास होता है, न गुणों की परख होती है । उद्योग का अर्थ है, उत+योग, यानी ऊँचा योग ।

उद्योग में केवल चरखा या तकली हो, यह मेरा विचार नहीं । आधुनिक यंत्र भी हो, वर्कशॉप भी हो । लेकिन खेती तो होनी ही चाहिए । बच्चों को और शिक्षकों को थोड़ी देर इकट्ठे होकर खेत में काम करना चाहिए । खेती के साथ, प्रकृति के साथ संबंध होना अत्यंत आवश्यक है ।

तीसरा है, सहयोग । इसके अंदर सारा समाजशास्त्र इत्यादि आ जाएगा । हमको सबको इकट्ठा जीना है, सहजीवन जीना है । सहयोग में सबका सहयोग-प्राणियों का, मानवों का, सबका सहयोग अपेक्षित है ।

- विनोबा

## Where the mind is without fear

Where the mind is without fear  
And the head is held high;  
Where knowledge is free  
Where the world has not been broken up  
into fragments by narrow domestic wars;  
Where words come out  
from the depth of truth;  
Where tireless striving stretches  
its arms towards perfection;  
where the clear stream of reason  
has not lost its way into  
the dreary desert sand of dead habit;  
where the mind is led forward  
by thee into ever -widening  
thought and action-  
Into that heaven of freedom,  
my Father, let my country awake.

- Rabindranath Tagore

## If...

If you can keep your head when all about you  
Are losing theirs and blaming it on you;  
If you can trust yourself when all men doubt you  
But make allowance for their doubting too:  
If you can wait and not be tired by waiting,  
Or, being lied about, don't deal in lies,  
Or being hated don't give way to hating,  
And yet don't look too good, nor talk too wise;

If you can dream—  
and not make dreams your master;  
If you can think—  
and not make thoughts your aim,  
If you can meet with Triumph and Disaster  
And treat those two impostors just the same;  
If you can bear to hear the truth you've spoken  
Twisted by knaves to make a trap for fools,  
Or watch the things you gave your life to, broken,  
And stoop and build'em up with worn-out tools;

If you can make one heap of all your winnings  
And risk it on one turn of pitch-and-toss,  
And lose, and start again at your beginnings,  
And never breathe a word about your loss:  
If you can force your heart and nerve and sinew  
To serve your turn long after they are gone,  
And so hold on when there is nothing in you  
Except the Will which says to them: "Hold on!"

If you can talk with crowds and keep your virtue,  
Or walk with Kings — nor lose the common touch,  
If neither foes nor loving friends can hurt you,  
If all men count with you, but none too much:  
If you can fill the unforgiving minute  
With sixty seconds' worth of distance run,  
Yours is the Earth and everything that's in it,  
And—which is more —you'll be a Man, my son!

- **Rudyard Kipling**

## **Education**

I do not want my house to be walled in on all sides and my windows to be stuffed. I want the cultures of all lands to be blown about my house as freely as possible. But I refuse to be blown off my feet by any. I would have our young men and women with literary tastes to learn as much of English and other world languages as they like, and then expect them to give the benefits of their learning to India to the world as a Bose, a Roy or the poet himself. But I would not have a single Indian to forget, neglect or be ashamed of his mother tongue, or to feel that he or she cannot think or express the best thoughts in his or her own vernacular. Mine is not a religion of the prison- house.

**Letter to Ravindranath Tagore by M.K.Gandhi**  
(Young India ,01/06/21,170)

## A psalm of life

Tell me not, in mournful numbers,  
Life is but an empty dream!  
For the soul is dead that slumbers,  
And things are not what they seem.

Life is real ! Life is earnest!  
And the grave is not its goal;  
Dust thou art, to dust returnest,  
Was not spoken of the soul.

Not enjoyment, and not sorrow,  
Is our destined end or way;  
But to act, that each to-morrow  
Find us farther than to-day.

Art is long, and Time is fleeting,  
And our hearts, though stout and brave,  
Still, like muffled drums, are beating  
Funeral marches to the grave.

In the world's broad field of battle,  
In the bivouac of life,  
Be not like dumb, driven cattle!  
Be a hero in the strife!

Trust no future, howe'er pleasant  
Let the dead Past bury its dead!  
Act,— act in the living present!  
Heart within, and God o'erhead!

Lives of great men all remind us  
We can make our lives sublime,  
And, departing, leave behind us  
Footprints on the sands of time;

Footprints, that perhaps another,  
Sailing o'er life's solemn main,  
A forlorn and shipwrecked brother,  
Seeing, shall take heart again.

Let us , then, be up and doing  
With a heart for any fate;  
Still achieving, still pursuing,  
Learn to labor and to wait.

- H.W. Longfellow

## The Paradox of our times

Is that we have taller buildings, but shorter tempers  
Wider freeways, but narrower viewpoints  
We spend more, but we have less  
We have bigger houses, but smaller families  
More conveniences, but less time  
We have more degrees, but less sense  
More knowledge, but less judgement  
More experts , but more problems  
More medicines , but less wellness  
We have multiplied our possessions,  
but reduced our values  
We talk too much, love too seldom,  
and hate too often  
We have learnt how to make a living ,  
but not a life  
We have added years to life, but not life to years  
We've been all the way to the moon and back  
But have trouble crossing the street  
to meet the new neighbour  
We have conquered outer space,  
but not inner space

We have cleaned up the air, but polluted our soul  
We've split the atom, but not our prejudice  
We've higher incomes, but lower morals  
We've become long on quantity  
but short on quality  
These are the times of tall men, and short character  
Steep profits, and shallow relationships  
These are the times of world peace,  
but domestic warfare  
More leisure, but less fun; more kinds of food, but less  
nutrition  
These are the days of two incomes,  
but more divorces  
Of fancier houses, but broken homes  
It is a time when there is much in the show window  
And nothing in the stockroom  
A time when technology can bring this letter to you  
And a time when you can choose  
Either to make a difference—— or just hit, delete.

- Dalai Lama

## The Heart of the Tree

What does he plant who plants a tree ?  
He plants a friend of sun and sky;  
He plants a flag of breezes free;  
The shaft of beauty, towering high.  
He plants a home to heaven a nigh  
For song and mother-croon of bird  
In hushed and happy twilight heard—  
The treble of heaven's harmony—  
These things he plants who plants a tree.

What does he plant who plants a tree?  
He plants cool shade and tender rain,  
And seed and bud of days to be,  
And years that fade and flush again;  
He plants the glory of the plain;  
He plants the forest's heritage;  
The harvest of the coming age;  
The joy that unborn eyes shall see—  
These things he plants who plants a tree.

What does he plant who plants a tree?  
He plants, in sap and leaf and wood,  
In love of home and loyalty  
And far cast thought of civic good  
His blessing on the neighbourhood  
Who in the hollow of His hand  
Holds all the growth of all our land—  
A nation's growth from sea to sea  
Stirs in his heart who plants a tree.

- H.C.Bunner

## **Prayer for a willingness to serve others**

Lord, make us instruments of your peace.  
Where there is hatred, let us sow love;  
Where there is injury, pardon;  
Where there is discord, union  
Where there is doubt, faith;  
Where there is despair, hope;  
Where there is darkness, light;  
Where there is sadness, joy;  
Grant that we may not so much seek  
To be consoled as to console;  
To be understood as to understand;  
To be loved as to love.

For it is in giving that we receive;  
It is pardoning that we are pardoned;  
And it is in dying that we are born to eternal life.  
Amen !

**- St. Francis of Assisi (1181-1226)**

## We shall overcome

We shall overcome  
We shall overcome  
We shall overcome some day,  
O! deep in my heart, do believe that  
We shall overcome some day.

We'll walk hand in hand  
We'll walk hand in hand  
We'll walk hand in handsome day,  
O! deep in my heart, I do believe that  
We shall overcome some day.

We shall live in peace  
We shall live in peace  
We shall live in peace some day  
O! deep in my heart, I do believe that  
We shall over come some day.

The truth will make us free  
The truth will make us free  
The truth will make us free some day,  
O! deep in my heart I do believe that  
We shall over come some day.

We are not afraid  
We are not afraid  
We are not afraid, today  
O! deep in my heart , I do believe that  
We shall overcome some day.

- Charles Albert Tindley, 1901  
African Methodist Episcopal Church Minister

## The Quest for Reality

Everyone seeks joy in this world,  
And on account of the hope comes fire.  
The old and the young are gold-seekers,  
And They know not the difference,  
the gold from the tin,  
For the common of heart cannot see so well,  
The good form the bad, the cheap form the pure.  
If you have your own touchstone,  
then all will be well,  
But those who have none should seek one who does,  
Seek one who knows the difference,  
All others will lead you astray.  
Don't follow the cry of riches to be,  
Don't trek to the spot where the promise is made,  
For there all you'll find  
are the wolves and the lions,  
And the day will be spent,  
Life lost, and the road far off.  
Find the Work of your life, and the Worker too,  
For both exist as one- this is you.  
Discover vocation, creation,  
and joy will come like clairvoyance,  
Where blindness is gone before.

- Mawlana Jalalad-Din Muhammad Rumi  
13<sup>th</sup> Century Sufi Poet

आजकल दुनिया एक अजीब दिशा में जा रही है,  
खासकर शिक्षा की दुनिया ।  
इसमें नंबरो और तमगों की होड़ लगी है।  
हमारी समझ में यह दिशा गलत है।  
हमारा प्रयास रहेगा कि,  
आपको सही शिक्षा मिले।  
जिसमे आपकी सोचने की शक्ति,  
जो सही सिद्धांतो और उनके  
क्रियान्वयन पर आधारित हो ।  
आपका मानवतावादी दृष्टिकोण हो  
और आप अपने आपको उभारने पर तुले हों,  
आपमें कठिनाइयों से उभरने का मनोबल हो ।  
याने आपमें चरित्र और योग्यता हो ।  
यह विचारधन इन सब विचारों को दर्शाते हैं।